साँची स्तूप से यूरोप की यात्रा

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारत के विदेश मंत्री ने जर्मनी के बर्लिन में **हम्बोल्ट फोरम संग्रहालय** के सामने स्थित **साँची स्तूप के पूर्वी द्वार** की **प्रतिकृति का दौरा किया।**

मुख्य बिंदु

- **साँची स्तूप का निर्माण:** इसका निर्माण **अशोक ने तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व** में करवाया था ।
  - इसके निर्माण की देख-रेख **अशोक की पत्नी देवी ने की थी,** जो पास के व्यापारिक शहर **विदिशा से थीं**
  - साँची परिसर के विकास को विदिशा के **व्यापारिक समुदाय के संरक्षण से समर्थन प्राप्त हुआ।**
- **विस्तार: दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व (शुंग काल)** के दौरान, स्तूप को बलुआ पत्थर की पट्टियों, एक **परिक्रमा पथ** और एक **छत्र (छाता)** के साथ एक **हर्मिका के साथ विस्तारित किया गया था।**
  - **पहली शताब्दी ईसा पूर्व** से **दूसरी शताब्दी ईस्वी तक**, चार पत्थर के प्रवेश द्वार या **तोरण बनाए गए, जो** बौद्ध प्रतिमा विज्ञान और कहानियों को दर्शाती विस्तृत नक्काशी से सुसज्जित थे।
- **साँची स्तूप की पुनः खोज: वर्ष 1818 में जब** ब्रिटिश अधिकारी **हेनरी टेलर ने इसकी खोज की** थी तब यह पूरी तरह खंडहर अवस्था में था ।
  - **अलेक्जेंडर कनिंघम ने वर्ष 1851** में साँची में **प्रथम औपचारिक सर्वेक्षण और उत्खनन का** नेतृत्व किया
- **संरक्षण के प्रयास: वर्ष 1853** में भोपाल की सिकंदर बेगम ने **महारानी विक्टोरिया** को **साँची** के प्रवेशद्वार भेजने की पेशकश की, लेकिन **वर्ष 1857 के विद्रोह** और परिवहन संबंधी समस्याओं के कारण प्रवेशद्वार हटाने की योजना में देरी हुई ।
  - वर्ष 1868 में बेगम ने फिर से प्रस्ताव दिया, लेकिन औपनिवेशिक अधिकारियों ने इसे अस्वीकार कर दिया और **यथास्थान संरक्षण का विकल्प चुना**। इसके बजाय पूर्वी प्रवेशद्वार का **प्लास्टर कास्ट** बनाया गया।
  - इस स्थल को इसकी वर्तमान स्थिति में 1910 के दशक में **भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) के** महानिदेशक **जॉन मार्शल द्वारा** निकटवर्ती भोपाल की बेगमों से प्राप्त धनराशि से बहाल किया गया था।
    - **मार्शल के प्रयासों से वर्ष 1919** में उस स्थान पर कलाकृतियों को संरक्षित करने और संरक्षण का प्रबंधन करने के लिये एक संग्रहालय का निर्माण किया गया ।

साँची स्तूप की वास्तुकला

- **अंडाकार:** यह धरती पर बना एक **अर्द्धगोलाकार टीला है।**
- **हर्मिका:** टीले के ऊपर **चौकोर रेलिंग है। ऐसा माना जाता है कि यह भगवान का निवास स्थान है।**
- **छत्र:** यह गुंबद के शीर्ष पर बनी **छतरी है।**
- **यष्टि:** यह **केंद्रीय स्तंभ है** जो छत्र नामक तिहरे छत्रनुमा संरचना को सहारा देता है।
- **रेलिंग:** यह **स्तूप के चारों ओर लगी होती है,** पवित्र क्षेत्र को सीमांकित करती है तथा पवित्र स्थान और बाहरी वातावरण के बीच एक भौतिक सीमा प्रदान करती है।
- **प्रदक्षिणापथ (परिक्रमा पथ): यह स्तूप के चारों ओर** एक पैदल मार्ग है जो भक्तों को पूजा के रूप में दक्षिणावर्त दिशा में चलने की अनुमति देता है।
- **तोरण: तोरण** बौद्ध स्तूप वास्तुकला में एक स्मारकीय **प्रवेश द्वार या प्रवेश संरचना है।**
- **मेधी:** यह उस **आधार को संदर्भित करता है** जो एक मंच बनाता है जिस पर स्तूप की मुख्य संरचना खड़ी होती है।
- **UNESCO मान्यता:** साँची स्तूप को वर्ष 1989 में **UNESCO विश्व धरोहर स्थल के रूप में अंकित किया गया था।**

//

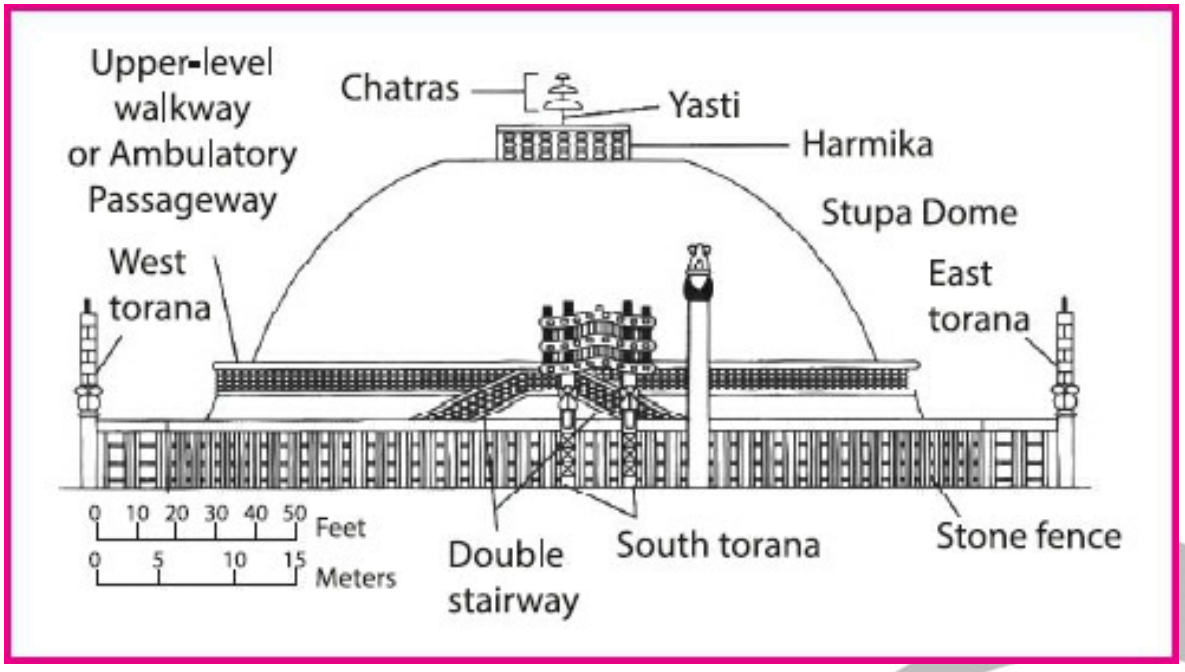

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/journey-of-sanchi-stupa-to-europe